होली है भाई होली है, बुरा न मानो होली है

छोटी-मोटी बात पर, मत करना तकरार
हंसी-ठिठोली से भरा, होली का त्योहार

होली आयी उड़े गुलाल, रंग हरा, पीला और लाल,
मस्ती सबके सिर पे छाई, रंग देंगे हम सबके गाल

नेताओं ने पी रखी, जाने कैसी भंग,
मुश्किल है पहचानना, सब चहरे बदरंग

नयन हमारे नम हुए, गांव आ गया याद
वो होली की मस्तियां, कीचड़ वाला नाद

राष्ट्रदूत ने खोला हास्य व्यंग्य की खुशियों का पिटारा

होली सिर्फ रंगों का ही त्योहार नहीं है, बल्कि यह साथ मिलकर हंसने-हंसाने, गुदगुदाने और खुशियां मनाने का भी त्योहार है। होली भारतीय संस्कृति का पवित्र त्योहार है। फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाने वाला यह रंगोत्सव हर्षोल्लास की अभिव्यक्ति करने वाला हास-परिहास का पर्व है। फाल्गुन माह में मनाए जाने के कारण इसे फाल्गुनी भी कहते हैं। इस दिन से फाग और धमार का गाना प्रारंभ हो जाता है। खेतों में सरसों खिल उठती है। बाग-बगीचों में फूलों की आकर्षक छटा छा जाती है। पेड़-पौधे, पशु-पक्षी और मनुष्य सब उल्लास से आल्हादित हो जाते हैं। खेतों में गेहूँ की बालियाँ इठलाने लगती हैं। किसानों का हृदय खुशी से नाच उठता है। बच्चे-बुजुर्ग सभी सब कुछ संकोच और रूढ़ियाँ भूलकर ढोलक-झाँझ-मंजीरों की धुन के साथ नृत्य-संगीत व रंगों में डूब जाते हैं। उत्साह और उमंग से भरा ये त्योहार एक दूसरे के प्रति प्रेम, भ्रातत्व स्नेह और निकटता लाता है। इसमें लोग आपस में मिलते है, गले लगते है और एक दूसरे को रंग और अबीर लगाते है। इस दौरान सभी मिलकर ढोलक, हारमोनियम तथा करताल की धुन पर धार्मिक और फागुन गीत गाते है। होली के साथ हास परिहास अनिवार्य रूप से जुड़ा हुआ है। जीवन में हास परिहास न होतो जिंदगी नीरस और बोझिल बन जाती है। होली का ख्याल आते ही हमारे मन मस्तिष्क में व्यंग्य-विनोद, हर्ष-उल्लास, प्रसन्नता, स्वतंत्रता, हंसी-ठिठोली, राग-रंग, आमोद-प्रमोद की सुंदर, सरस, सद्भाव-सौहार्द,समरसता एवं सुमधुर छवि साकार हो उठती है। तन मन खिल उठता है। होली हास्य-व्यंग्य और मटरगस्ती का महोत्सव भी है। होली समाज में व्याप्त जड़ता और ठहराव को तोड़ने का त्योहार है। मनुष्य को गतिमान करने के लिए राग और रंग जरूरी है। रंगों के त्योहार होली पर हास्य व्यंग्य का तड़का लग जाये तो यकीनन मज़ा दुगुना हो जाता है। होली में राग, रंग, हंसी, ठिठोली, लय, चुहल, आनंद और मस्ती है। इस त्योहार से सामाजिक जड़ताएं टूटती हैं, वर्जनाओं से मुक्ति का अहसास होता है, जहां न कोई बड़ा है, न छोटा, न अमीर है न गरीब। इस पर्व में व्यक्ति और समाज राग और द्वेष भुलाकर एकाकार होते हैं। होली हास्य-व्यंग्य का त्योहार है। होली और हुड़दंग में चोली-दामन का साथ है। यदि हुडदंग न हो तो मजा ही नहीं आता। इसी से तो हंसी ठहाके का माहौल लगता है। लोग एक दूसरे पर रंगों के साथ- साथ व्यंग्य के छींटे डालते हैं। वर्ष भर से मन के भीतर का गुबार और भड़ास बाहर निकालते हैं। काटों में शरारत, फूलों पर खुमार, रंगपर्व ले आया मौसम का उपहार। इसलिए होली के हुड़दंग में, उल्लास में उमंग में, मन की तरंग में, हंसी-खुशी के रंग में भीगने को हो जाइए तैयार। होली सिर्फ उच्छृंखलता का उत्सव नहीं है. वह व्यक्ति और समाज को साधने और जोड़ने की भी शिक्षा देता है। यह सामाजिक विषमताओं को दूर करने का भी त्योहार है। आज भी होली आने पर पुरानी यादें ताज़ा हो जाती हैं। मटरगस्ती का त्योहार है होली। चारो तरफ होली का खुमार छाया हुआ है। रंग बिरंगे रंगों से वातावरण सराबोर है। रंगों के इस त्योहार का एक रंग हास्य और व्यंग्य भी है। इसके बिना होली अधूरी सी लगती है। होली पर किसी को कुछ भी कहने की छूट रहती है। रंग न हो तो गोबर कीचड़ तक उछाला जाता है। सब कुछ किया जाता है सिर्फ एक बात के साथ- बुरा न मानो होली है। देश के सबसे बड़े त्योहार होली पर राग रंगों की बौछार के साथ हास्य व्यंग्य के शब्द बाण भी छोड़े जाते हैं। होली की उपाधियों का अपना एक अलग आनंद है। राष्ट्रदूत की होली पर उपाधियों की अपनी पुरानी परम्परा है। उपाधि देने का मकसद उसके स्वभाव पर चुटीले व्यंग्य कसकर उसे सतर्क और सजग करना होता है न कि किसी को पीड़ा पहुँचाना। वह भी एक जमाना था जब पत्र पत्रिकाओं में होली पर जाने माने लोगों को व्यंग्य भरी उपाधियां बांटी जाती थीं । लोग हाथ से लिख कर या छपवाकर उपाधियों के परचे बांटते थे। सवेरे जाग होने पर बड़ा हंगामा होता था। पाठक होली का बेसब्री से इंतजार करते थे ताकि अपने मनपसंद व्यक्ति की उपाधि चाव के साथ देख सके। इस व्यावसायिक दौर में अख़बारों में उपाधियों के पृष्ठ गायब हो गए। राष्ट्रदूत आज भी अपनी इस परम्परा का हंसी खुशी से निर्वहन कर रहा है। होली मौजमस्ती का बांका त्योंहार है। इसे बावला त्योंहार भी कहा जाता है। इन उपाधियों को सहज ढंग से स्वीकार करना चाहिए और फिर अगली होली का इंतजार करना चाहिए। आशा है सदा की तरह हास्य व्यंग्य से ओतप्रोत चुटीली उपाधियों को ग्रहण कर स्वयं को सम्मानित महसूस करेंगे। आप सभी को होली की शुभकामनाएं।

बाल मुकुंद ओझा
होली परिशिष्ट के अतिथि संपादक वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

24 मार्च
होलिका दहन मुहूर्त
रात्रि 11 बजकर 13 मिनट से लेकर 12 बजकर 33 मिनट
भद्रा पूंछ : शाम 6.33 से शाम 7.53 बजे
भद्रा मुख : शाम 7.53 से रात 10.06 बजे

25 मार्च :
रंगवाली होली
पूर्णिमा तिथि आरंभ : सुबह 9.54 (24 मार्च)
पूर्णिमा तिथि समाप्त : दोपहर 12.29 (25 मार्च)

होली के पावन पर्व पर आप सभी को राष्ट्रदूत परिवार की ओर से बहुत-बहुत रंगों भरी, उमंगों भरी शुभकामनाएं

सियासत के सूरमा

जगदीप धनखड़	संकट मोचक
ओम बिरला	माहिर खिलाड़ी
गुलाबचंद कटारिया	धर्मक्षेत्रे-कुरुक्षेत्रे
कलराज श्रिम	वटवृक्ष की शीतल छांव
भजनलाल	मोदी का लाडला/भाग्यशाली
वासुदेव देवनानी	माननीय
अरुण सिंह	स्टेट्समैन
डॉ. विनय सहस्त्रबुधे	थिंक टैंक
विजया राहटकर	ताई का तमगा
सीपी जोशी	बिल्ली के भाग का छींका टूटा
वसुंधरा राजे	बड़ा सपना टूट गया
राजेंद्र राठौड़	आखिरी जंग
सतीश पूनियां	लड़ता रहा हूँ, लड़ाता रहूँगा
घनश्याम तिवाड़ी	लौटकर तो आ गया हूँ
रामचरण बोहरा	मुझको मुझी से मिला दो
नारायण पंचारिया	सादगी की प्रतिमूर्ति
बाबा बालकनाथ	सपने रहे अधूरे
चुन्नीलाल गरासिया	कभी खुशी कभी गम
मुकेश दाधीच	बगल से निकला जादू
अजयपाल सिंह	नया नौ दिन, पुराना सौ दिन
प्रभुलाल सैनी	गुट से गुट तक निरपराधी
सीआर चौधरी	पुराना चावल
मोतीलाल मीणा	छुपे रुस्तम
ज्योति मिर्धा	विफल शक्ति वाहक
जितेंद्र गोठवाल	हंसता हुआ परिंदा
संतोष अहलावत	भाग्य का संतोष है
ओमप्रकाश भड़ाना	अब मैं बड़ा हो गया
दिया कुमारी	राजकुमारी का जलवा
प्रेमचंद बैरवा	जिसका सपना टूटा नहीं
किरोड़ी लाल मीणा	बूढ़ा हुआ शिकारी बाज
गजेंद्र सिंह खींवसर	अवसर का राजा
मदन दिलावर	खून अभी गरम है
कन्हैयालाल चौधरी	राजनीतिक ठेकेदारी
जोगाराम पटेल	कानूनी परिवारवाद
सुरेश सिंह रावत	सादगी का संगठनवासी
अविनाश गहलोत	मैं नया गहलोत हूं
सुमित गोदारा	मुझसे बड़ा कोई नहीं
जोराराम कुमावत	मैं भी मंत्री हूं
बाबूलाल खराड़ी	ना काहू से दोस्ती ना काहू से बैर
हेमंत मीणा	सरलता में भी संविधान
संजय शर्मा	बड़े मन का छोटा नाम
गौतम कुमार	बणिया किसी से कम नहीं होता
झाबर सिंह खर्रा	खुर्राट बनी रहेगी
हीरालाल नागर	बिजली सा करंट दौड़े
ओटाराम देवासी	अध्यात्म में बड़ी ताकत होती है
डॉ. मंजू बाघमार	पढ़ी-लिखी मंत्री
विजय सिंह चौधरी	मारवाड़ का नया किला
कृष्ण कुमार के.के. बिश्नोई	सबको साथ ले लूंगा
जवाहर सिंह बेढम	हर गुट निगुर्टधारी
आनन्द शर्मा	काम ही काम

कांग्रेस

सचिन पायलट	ऊंची उड़ान की तैयारी..
गोविंद सिंह डोटासरा	फूफा जी का फटकारा
हरीश चौधरी	सरहद की सियासत का मास्टर
डॉ. सीपी जोशी	एक तो करेला दूजा नीम चढ़ा
अशोक गहलोत	घर का जोगी जोगना आन गांव का सिद्ध...
विश्वेंद्र सिंह	कहां राजा भोज
भंवर जितेंद्र सिंह	फूल बाग की कांग्रेस
टीकाराम जूली	मन चंगा तो कठौती में गंगा
डॉ बी डी कल्ला	घर की मुर्गी दाल बराबर
हरीश मीणा	आम के आम गुठलियों के दाम
प्रमोद जैन भाया	जितना अच्छा, उतना मीठा
शांति धारीवाल	डूबते को तिनके का सहारा
डॉ रघु शर्मा	थोथा चना बाजे घणा
डॉ. महेश जोशी	ना घर का ना घाट का
प्रताप सिंह खाचरियावास	लगा तो तीर नहीं तो तुक्का
आर आर तिवाड़ी	खिसियानी बिल्ली खंबा नोचे
इंद्राज गुर्जर	कंगाली में आटा गीला
बृजेंद्र ओला	अंधा क्या चाहे दो आंखें
गोविंद मेघवाल	कागा चले हंस की चाल
संयम लोढ़ा	जिस थाली में खाना उसी में छेद करना
महादेव सिंह खंडेला	खाली दिमाग शैतान का घर
कर्नल सोनाराम	आडू चल्या हाट ना ताकड़ी ना बात
हेमाराम चौधरी	अपनी पगड़ी अपने हाथ
धीरज गुर्जर	इतनी सी जान, गज भर की जुबान
रामलाल जाट	उतर गई लोई तो क्या करेगा कोई
परसादी लाल मीणा	काठ की हांडी, बार-बार नहीं चढ़ती
वैभव गहलोत	गीदड़ की शामत, शहर की तरफ दौड़
बाबूलाल नागर	चांद पर थूका मुंह पर गिरा
ममता भूपेश	मावसी की म्याऊं म्याऊ

शासन के तीरदांज

सुधांश पंत	डंडा चल रहा है
डॉ. सुबोध अग्रवाल	हमारे भी दिन फिरेंगे
शुभ्रा सिंह	ज्यों ज्यों दवा की, मर्ज बढ़ता गया
अभय कुमार	कोउ नृप होई हमें का हानि
अखिल अरोडा	मुद्दई लाख बुरा चाहे तो क्या होता है
आलोक	उर्जा में करंटे
अपर्णा अरोड़ा	जंगल की शेरनी
शिखर अग्रवाल	सत्ता मं अब सन्ता के शिखर पर
संदीप वर्मा	अपनी ढपली अपना राग
कुलदीप रांका	काम से काम, जय सिया राम
श्रेया गुहा	टारगेट बाकी
आनन्द कुमार	इधर कुआं उधर खाई तैयार
प्रवीण गुप्त	अब हमारी बारी
भास्कर आत्माराम सांवत	खाद्य आपूर्ति
अश्वनी भगत	दिन अभी नहीं बदले
कुंजी लाल मीणा	समय समय की बात
अजिताभ शर्मा	इंतजार का मीठा फल
आलोक गुप्ता	भद्र पुरुष
दिनेश कुमार	इंतजार जारी है
हेमंत गेरा	अदला-बदली में अटके
नवीन महाजन	कद्र ना जाने कोई
गायत्री राठौड़	अभी तो सैर सपाटा जारी
वैभव गलारिया	खेती-बाडी
टी रविकांत	शहरी विकास
सुबीर कुमार	उच्च शिक्षा
भवानी सिंह देथा	खेल कूद
विकास सीताराम भाले	ना तीन में ना तेरह में
मंजू राजपाल	छींका टूटा
नवीन जैन	गुरुजी पड़ गए भारी
डॉ. कृष्णकांत पाठक	पढ़े फारसी बेचे तेल
डॉ. पृथ्वीराज	आधा अधूरा ईलाज
कृष्ण कुणाल	वनवास से वापसी
भानू प्रकाश एटरु	करंट में
रवि जैन	पंचायती अभी बाकी है
डॉ. समित शर्मा	काजल की कोठरी
आशुतोष पेडनेकर	बर्फ में
रवि कुमार सुरपुर	टारगेट सिर पर
आरुषी मलिक	बैठे से बेगार भली
डॉ. जोगा राम	आदिवासियों के बीच
पूरण चंद	कौशल विकास
पी रमेश	छुक छुक गाड़ी
पूनम	मास्टरनी
गौरव गोयल	काम ना आया कोई
आरती डोगरा	अब तकनीक का सहारा
वी सरवण	चलते रहो
सुधीर कुमार	प्रोटोकाल जिन्दाबाद
नरेश कुमार	खाता-बही बरकरार
आनन्दी	खदान में गोल्ड मेडल
शुचि त्यागी	जय सहकार
निर्मला मीणा	बाल विकास
राजन विशाल	मेरा क्या कसूर
अर्चना सिंह	एक सबके लिए सब एक के लिए
मोहन लाल यादव	महिला बाल विकास की पंचायती
महेन्द्र सोनी	मास्टर जी
विजय पाल सिंह	फिट एण्ड फाइन
सुषमा अरोडा	डेयरी जिंदाबाद
रश्मि गुप्ता	कानून थी जकड़ में
कुमार पाल गौतम	रोजगार की तलाश
शैली किशनानी	जय सिया राम
चित्रा गुप्ता	बच्चों को पढ़ाओं
घणेन्द्र भान चतुर्वेदी	समय की पाबंदी
करण सिंह	चाइल्ड लेबर
विश्राम मीणा	भूजल प्रबंधन
प्रकाश राजपुरोहित	अपनी तो मौज बरकरार
जितेन्द्र कुमार सोनी	सही जगह
इन्द्र जीत सिंह	नए अवसर की तलाश जारी
नेहा गिरी	दवाइयों का जिम्मा
विश्व मोहन शर्मा	कुछ तो अच्छा करना होगा
ओम प्रकाश बुनकर	पोषण में करो सुधार
कन्हैया लाल	खेती-बाडी
हुदेश कुमार शर्मा	अच्छे दिन अभी दूर
लक्ष्मण सिंह	बागवानी
नलिनी कठोतिया	ये भी अपने भाई है
मेघराज सिंह	खग जाने खग की भाषा
अनुप्रेरणा कुतल	कुछ करके दिखाओ
राजेन्द्र विजय	मिलावट का बाजार
प्रकाश चंद शर्मा	पारखी नजर
नकाते शिव प्रसाद	ऊंची दुकान फीका पकवान
संदेश नायक	कद्र की पहचान
शिवांगी सावरकर	गाड़ी चल रही है
अनुपमा जोरवाल	अवसर के बीच
एच गुट्टी	चर्चाओं के बीच
हरी मोहन मीणा	अभाव अभियोग
नरेन्द्र गुप्ता	हिसाब किताब
अनिल कुमार	जांच करूंगा
रूक्मणी रियार	ना दिन का चैन ना रात का चैन
सिद्धार्थ सिहाग	बडे दरबार में
हिमांशु गुप्ता	इंवेस्टमेंट
अविचल चतुर्वेदी	ककहरा
टीकम चंद	सरकारी खाता बही
नथ मल डिडेल	फिट नहीं हुआ
महावरी प्रसाद	जमीनी हिसाब
रामावतार मीणा	सुचारू व्यवस्था करो
डॉ. रश्मि	पर्यटन पर
इकबाल खान	गुपचुप
डॉ. मनीषा अरोडा	बेपटरी को पटरी में लाने की कसरत
सुनील शर्मा	कमजोर पब्लिक रिलेशन
पुखराज सेन	सिर मुंडाते ही ओले गिरे
मुकुल शर्मा	उद्योग जिंदाबाद
सुरेश कुमार ओला	तकदीर का खेल
प्रियंका गोस्वामी	चिरंजीवी मुख्यमंत्री आयुष्मान का चक्रव्यूह
जगजीत सिंह मोंगा	चलती का नाम गाड़ी
डा अरूण गर्ग	हाजमा खराब
राजेन्द्र कुमार वर्मा	जल बिन मछली
अल्पा चौधरी	छोटी बड़ी मछलियों के बीच
संचिता विश्नोई	फेयर इलेक्शन
हर्ष सावनसुखा	खुद भला तो जग भला
बाबू लाल गोयल	सारे जहां से अच्छा
नारायण सिंह	जतन करों
किशोर कुमार	आने जाने का इन्तजाम
बचनेश अग्रवाल	पानी के दल दल में
सौरभ स्वामी	काला पानी की...
डॉ. घनश्याम	गुमनामी में
डॉ. ओम प्रकाश बैरवा	जां ही जां
डॉ. अभिषेक खडगावत	भला करो
अभिषेक सुराना	व्यवस्था चाक चौबन्द
अपणा गुप्ता	हम किसी से कम नहीं
डॉ. शिल्पा सिंह	काम करके दिखाओ
मुहम्मद जुनेद	खर्चे का हिसाब किताब
मयंक मनीष	क्या कहे
कनिष्क कटारिया	अब कोई डर नहीं
गिरधर	करन्ट की तलाश

खाकी

यू.आर. साहू	मौके पर चौका
राजीव शर्मा	घूसखोरी
भूपेन्द्र दक	जेल की सलाख
जंगा श्रीनिवास राव	ठंडा बस्ता
रवि प्रकाश मेहरड़ा	साइबर ठगी
संजय अठावाल	जग्गा जासूस
सुनील दत्त	कायदा-कानून
वी.के. सिंह	पेपर लीक
हेमंद प्रियदर्शी	ऊंचा कद
आनंद श्रीवास्तव	हल्के तेवर
अशोक राठौड़	पुरानी वाली एसओजी
सचिन मित्तल	भर्ती बोर्ड
दिनेश एम.एन.	एंटी गैंगस्टर
विशाल बंसल	नफरी
हवा सिंह घुमरिया	लालबत्ती
एस. सेंगाथिर- ठंड़ा	ठंडा कूल-कूल
उमेश चंद्र दत्ता	गांव का दरोगा
बीजू जार्ज जोसफ	बड़ा साहब
कैलाश विश्नोई	चोरी-चकारी
कुंवर राष्ट्रदीप	ताम-झाम
प्रीति चंद्रा	चालान काटो
कवेन्द्र सागर	नई जिम्मेदारी
अमित कुमार	नया खिलाड़ी
राशि डोगरा डूडी	जनसुनवाई
दिगंत आनंद	लम्बी जड़
राजेन्द्र सिंह सिसोदिया	राहत बचाव

चीरफाड़

डॉ. राजीव बगरहट्टा	दिल का छल्ला
डॉ. अचल शर्मा	सबका इलाज
डॉ. सुधीर भंडारी	मीठी बीमारी
डॉ. शशि मोहन	दिल का कारीगर
डॉ. संदीप जसूजा	लाइलाज बीमारी
डॉ. रमन शर्मा	खांसी-जुकाम
डॉ. दिनेश गौतम	वीआईपी इलाज
डॉ. महेन्द्र कुमार	फेफड़े की सफाई
डॉ. रश्मि कटारिया	ब्रेन हेमरेज
डॉ. संदीप निझावन	पेट में गैस
डॉ. विनय मल्होत्रा	पथरी का दर्द
डॉ. प्रदीप शर्मा	बच गए साहब
डॉ. विनय तोमर	किडनी फेल
डॉ. जीवन कांकरिया	चीरा लगाओ
डॉ. मोहिनीश ग्रोवर	कान का पर्दा
डॉ. अशोक गुप्ता	पुराना हकीम
डॉ. डी. एस. मीणा	घुटनों का दर्द
डॉ. गोवर्धन मीणा	कुत्ते का काटा
डॉ. राकेश जैन	चमड़ी चमकाओ
डॉ. कैलाश मीणा	बच्चों की बीमारी
डॉ. भावना शर्मा	सिर दर्द
डॉ. जगदीश मोदी	हड्डी जोड़
डॉ. अंजनी शर्मा	नाड़ी तंत्र
डॉ. संजय जैन	पागलखाना
डॉ. अजीत सिंह	सांस की बीमारी
डॉ. आशा वर्मा	लेबर पेन
डॉ. कुसुम लता	जच्चा वार्ड

बुलडोजर

मंजू राजपाल	झटपट एक्शन
हेम पुष्पा शर्मा	कागजी मुहर
डॉ. प्रिया बलराम शर्मा	मुख्यालय का राज
महेन्द्र कुमार शर्मा	बुलडोजर बाबा
देवेन्द्र गुप्ता	उस्ताद इंजीनियर
ओंकारमल राजोतिया	खजाने की पोटली
अजय गर्ग	राम-राम जपना...
रामप्रसाद रैगर	मीठी छुरी
नवल किशोर मीणा	यह कुर्सी सबसे भली
अशोक कुमार	लोमोड़ रिकॉर्डधारी मास्टर
सुनील शर्मा	सिस्टम का तालमेल
मनोज कुमार दुबे	सारे खेल निराले
हेमेन्द्र शर्मा	मेहनत का फल
विनोद कृष्णया	काम भला तो सब भला
विवेक शर्मा	गुड़ की डली
तरुण सिंघल	बुरे फंसे
सुरेन्द्र पंवार	अपनी तो बल्ले-बल्ले
अब्दुल मजीद	गुरू गुड़, चेला शक्कर

नरकासुर

डॉ. सौम्या गुर्जर	राजयोग वाली कुंडली
मुनेश गुर्जर	जैसा राज, वैसा काज
पुनीत कर्णावट	सत्ताधारी विपक्ष
असलम फारूकी	आका की मेहरबानी
कुसुम यादव	कुर्सी की आस
दिव्या सिंह	मोहमाया से दूर
शील धाबाई	खाली खजाने की खजांची
सुखप्रीत बंसल	लेडी सिंघम
मीनाक्षी शर्मा	समाजसेवी
अभय पुरोहित	अपना भी वक्त था
जितेंद्र श्रीमाली	कानूनी सिपाही
दुर्गेश नंदिनी	किसी की राई दुहाई में नहीं
राखी राठौड़	बगिया खूब संभाली
प्रवीण यादव	यारों का यार
विनोद चौधरी	गैराज का खेल
रमेश सैनी	लाइसेंस का गणित
रश्मि सैनी	पहुंच ऊपर तक
भारती लख्यानी	हरफनमौला
शेर सिंह धाकड़	तांत्रिक
पारस जैन	फायर बिग्रेड
करण शर्मा	नेतागिरी का शौक
निशांत सुरोलिया	भला मानस
मनोज मुद्गल	हमें तो अपनों ने लूटा
सुमित मिश्रा	धरातल पर काम किया
शक्ति सिंह मानपुरा	वार्ड भला और हम

नरक निगम

सुरेश कुमार ओला	हर ताले की चाबी
सीमा कुमारी	नई शुरुआत
रौनक बैरागी	अपना ही बोलबाला
ओमप्रकाश शर्मा	कानून की पोथी
पुष्पेंद्र सिंह राठौड़	हथौड़े की ताकत
अजय कुमार शर्मा	बुलडोजर पावर
जनार्दन शर्मा	पुराना खिलाड़ी
नवीन भारद्वाज	पावरफुल अफसर
ओम प्रकाश थानवी	नया जोश, नई उमंग
रेखा मीणा	कलम की धनी
अर्शदीप बराड़	काम से काम
कमलेश मीणा	चर्चाओं से दूर
संदीप दाधीच	अच्छी पोस्टिंग
संतलाल मक्कड़	हरफनमौला
सीता वर्मा	काम में माहिर
अतुल शर्मा	फेविकोल का जोड़
बलराम मीणा	गुरुजी के नक्शे कदम पर
कविता चौधरी	किसी की परवाह नहीं
रविंद्र सिंह	चाणक्य
सरोज ढाका	सादगी की मूरत
सोहन सिंह नरूका	कचरे में कहां फंस गया यार
युगांतर शर्मा	जेहि विधि राखे राम
दलीप पूनिया	किसी का झमेला नहीं
करतार सिंह	बाबाजी की कृपा से
के.के.गुप्ता	करंट का झटका
विजेंद्र सिंह पूनिया	जे.सी.बी.का जोर
मोहन मीणा	पुलिसिया डंडा
नितिन शर्मा	पांचों उंगली घी में
नाहर सिंह	खर्च के उस्ताद
महेश मिश्रा	जोड़-बाकी, गुणा-भाग
दिनेश गुप्ता	गलत बर्दाश्त नहीं
कमलेश जैमन	कहां फंस गया
महेश कुमार शर्मा	कुर्सी भली और हम
एन.के.अग्रवाल	काम से पहचान
मनमोहन सिंह शेखावत	कागजी गुरु
राजेश कुमार मीणा	यारों के यार
प्रदीप पारीक	मॉर्डन यमराज
मनोज गोस्वामी	अपना भी कभी राज था
ओम प्रकाश काला	आसमां से गिरे, खजूर में अटके
प्रदीप शर्मा	व्यवहार कुशल
प्रमोद खींची	मेरी अपनी दौड़
रूपाराम	अपनी तो बल्ले बल्ले
हिमांशु शर्मा	गुरु गुड़, चेला शक्कर
पंकज मीणा	वक्त का सिकंदर
देवेश शर्मा	मन यहीं अटका मेरा
मोतीलाल वर्मा	पुराना चावल
धर्मिता चौधरी	अपना दौर भी कम नहीं

शब्दों के खिलाड़ी

राजेंद्र भाणावत	साफ़ कहना सुखी रहना
राजेंद्र बोड़ा	अनुभवों का पिटारा
दीप नारायण पाण्डेय	बैक टू नेचर
पाना चंद जैन	इंसाफ़ का तराजू
जे के गर्ग	मैं लिखता ही तो रहता हूं दिन-रात
रामावतार शर्मा	बेहतर दुनिया के तलबगार
दुर्गाप्रसाद अग्रवाल	साहित्य शिरोमणि
नंद भारद्वाज	प्यार बांटते चलो
हरि राम मीणा	आदिवासी विमर्श
लोकेश कुमार साहिल	मैं हर एक पल का शायर हूं
मनीषा कुलश्रेष्ठ	कथा-कारीगर
हेतु भारद्वाज	अभी तो मैं जवान हूं
गोविंद माथुर	गए दिनों का सुराग़ लेकर
लक्ष्मी शर्मा	रानियों को रुला दिया
फारूक़ आफ़रीदी	जाने कहां गए वो दिन
यश गोयल	खबरों में कहानियां
अनुराग वाजपेयी	तीखी मार
वेद व्यास	होता है शब-ओ-रोज़ तमाशा मेरे आगे
संपत सरल	जबरा मारे और रोने भी न दे
सत्यनारायण	धरती कहे पुकार के
एस भाग्यम शर्मा	वणक्कम

कारोबारी डंक

रोहिताश नोलखा	स्वाद राजस्थान का
सौरभ	कर्ज का व्यापार
रानू जिंदल	विचारों-विचारों में विचार कर लेंगे
मनोज पाण्डेय	फिर मिलेंगे चलते-चलते
कृष्ण यादव	सुन्दरता में चार चांद
अंशुल भार्गव	देखेंगे, सोचेंगे, देख लेना, सोच लेना
लवलीश जैन	मंजिल की तरफ अग्रसर
पंकज जैन	जाना अंजाना से एक नाम
मुकुल गोयल	अच्छा है देखते है, हाथ में कुछ नहीं है
नरेश यादव	फुल सपोर्टिव
सुनील	शांत जीवन सुखी जीवन कोई शोर शराबा नहीं चाहिए
राजेश सोनी	जब तक बेस्ट नहीं तब तक रेस्ट नहीं
अनुराग शर्मा	मैनेजमेन्ट मैनेजमेन्ट खेलते है पहले
प्रशांत गुप्ता	मीठी जुबान
राजेंद्र शर्मा	बदलाव की ओर बढते कदम
मेघा जैन	समय का इन्तजार करो
आलोक श्रीवास्तव	कॉल तो हम अपने बाप का नहीं उठाते आप कोन
अरुण आर्य	शिक्षा सबका अधिकार
आशीष प्रधान	ऊंची मीनारें
अजीत सांगवान	हम किसी से कम है क्या
आशीष कुमार	कभी तो कुछ अच्छा होगा
अतुल जैन	होली दिवाली की राम राम
मनोज जैन	नई सोच सिर्फ दिवाली पर

(लगातार.....)